

3 (Sem-2/CBCS) HIN HC 1

2023

HINDI

Paper : HIN-HC-2016

( आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता )

( Honours Core )

Full Marks : 80

Time : 3 hours

*The figures in the margin indicate full marks  
for the questions*

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10
- (क) कबीर की काव्य-भाषा का नाम क्या है?
- (ख) कबीर के राम का स्वरूप कैसा है?
- (ग) विद्यापति के गुरु कौन थे?
- (घ) 'पद्मावत' की रचना किस ईस्वी को हुई थी?
- (ङ) सूरदास-रचित मूल ग्रंथों की संख्या कितनी मानी जाती है?
- (च) 'बाल-लीला' का अर्थ क्या है?
- (छ) 'रामचरितमानस' का प्रधान रस क्या है?
- (ज) तुलसीदास किस मार्ग के भक्त थे?



( 2 )

- (झ) परंपरा के अनुसार 'बिहारी सतसई' का समाप्ति-काल कौन-सा ईस्वी सन् माना जाता है?
- (ञ) 'सुजान' कौन है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए :  $2 \times 5 = 10$

- (क) विद्यापति ने किन भाषाओं में काव्य-रचना की है?
- (ख) कबीर की रचनाओं के कितने रूप हैं? वे क्या-क्या हैं?
- (ग) सूरदास की भक्ति-संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए।
- (घ) "देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा।" इसका आशय स्पष्ट कीजिए।
- (ङ) जायसी के काव्य की कोई दो कलापक्षीय विशेषताएँ लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :  $5 \times 4 = 20$

- (क) विद्यापति ने राधा की वंदना कैसे की है?
- (ख) 'मानसरोदक' खंड के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।
- (ग) तुलसीदास की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।
- (घ) 'सूरदास के विनय के पद' विषय पर एक टिप्पणी लिखिए।
- (ङ) 'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता के कारण बताइए।
- (च) घनानंद का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

( 3 )

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए :  $10 \times 4 = 40$

- (क) विद्यापति की शृंगार-भावना पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीर की साखियाँ वर्तमान समाज के लिए कितनी प्रासंगिक एवं सार्थक हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

- (ख) भावपक्षीय सौन्दर्य की दृष्टि से सूरदास के पदों का विवेचन कीजिए।

अथवा

"'पुष्पवाटिका-प्रसंग' में मानवीय प्रेम-भावना की सहज अभिव्यक्ति हुई है।" प्रस्तुत कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

- (ग) बिहारी के दोहों के कलापक्षीय सौन्दर्य पर विचार कीजिए।

अथवा

पठित पदों के आधार पर घनानंद की प्रेमानुभूति पर प्रकाश डालिए।

- (घ) निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :  
मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।  
जा तन की झाँई परत, स्यामु हरित दुति होइ।।



अथवा

हर जनि बिसरव मो ममिता, हम नर अधम परम पतिता।  
तुअ सन अधम-उधार न दोसर हम सन जग नहिं पतिता।  
जम के द्वारा जबाब कौन देव जखन बुझत,  
निज गुन कर बतिया।  
जब जम किंकर कोपि पठाएत तखन के होत धरहरिया।

★ ★ ★